JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक सौन्दर्य एक एतिहासिक धरोहर

डॉ0 कमल सिंह
इतिहास विभाग, के.के. एस.एस. प्वाईन्ट
कठायतवाडा नियर पी0 जी0 कॉलेज बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

सार

उत्तराखण्ड का बागेश्वर जनपद प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व विख्यात है यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही तपोभूमि रही है माँ नन्दा की इस भूमि में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्य हैं इस क्षेत्र को नन्दा देवी क्षेत्र भी कहा जा सकता है क्योंकि यहाँ हर घर में माँ नन्दा भगवती का मंदिर स्थापित है और प्रत्येक वर्ष नंदा भगवती की जात यात्राएं होती है एक तरफ हिमालय के ऊँचे–ऊँचे पहाड़ भारतवर्ष की प्रहरी की तरह रक्षा करता है ठीक इसी प्रकार इस पवित्र हिमालय से निकालने वाली पवित्र नदियाँ पिण्डर, पूर्वी रामगंगा, सरयू, कैल नदी इस क्षेत्र को धन धान्य बनाने में तथा अन्न उत्पादन में भारत वर्ष को समृद्ध बनाती हैं और इस क्षेत्र को अत्यधिक समृद्ध एवं पवित्र कर देती हैं।

इस क्षेत्र का प्राकृतिक सौन्दर्य मन मोह युक्त है यहाँ के हिमयुक्त शिखरों के तलहटी पर ऊची ऊची चोटियों के मध्य कटिक्षेत्र में झाड़ियों के वस्त्र हैं इनके बीच दुर्लभ औषधियां ऊगी है इन चोटियों की धार में दिव्य गुण वाले पादप हैं जो पृथ्वी से निकलकर औषधि अपने आस– पास के परिवेश को अलोकित कर रही है। इन रमणीय स्थलों मं प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच विश्व का हर प्राणी आना चाहता है। आधुनिकीकरण के इस युग में भी इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य का महत्व कम नहीं हुआ है यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सौन्दर्यता के कारण यहां विभिन्न देश विदेशों से पर्यटक पंहुचते हैं और इस क्षेत्र को धन्यवाद दिए वापस नहीं जाते है यहाँ अनेक ग्लेशियर हैं बुग्याल, गुफाएँ, उडियार, ताल एवं कुण्ड स्थित हैं। जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को और भी मनमोह युक्त कर देता है। किन्तु आज ग्लेशियरों का सूखना व बुग्यालों में दिव्य युक्त जड़ी बूंटियों व घास का न उगना व कुण्ड का सूखना इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट होने की संभावना दिन प्रतिदिन बढ़ रही है आज यहां प्रत्यक्ष रूप से पिण्डारी ग्लेशियर अपने मूल स्थान से 15 किमी पीछे होना इस बात की पुष्टि करता है।

हिमालय के उच्च चोटियों के मध्य बड़े घास के मैदानों के बीच सुन्दर तालें, कुण्ड है जिसकी पूजा अर्चना यहाँ के ग्वाल, अनियाल करते हैं यहां पर इन कुण्डों से अनियाल और पशु पानी पीते है और जीवन के लिए यह दिव्य जड़ी बूटी युक्त ताल, कुण्ड दानपुर में पवित्रता के प्रतिक के रूप में पूजे जाते हैं और यहाँ इस क्षेत्र के लोकजागरों में जनश्रुति है कि है की "प्राचीन काल में ये कुण्ड देवी माँ नंदा भगवती के दर्पण के रूप में कार्य करते थे। रूप कुण्ड इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी है" इन कुण्डों की पवित्रता आज भी वर्तमान समय में बनी हुई है। यहाँ के स्थानीय लोग आज भी इन कुण्डों की पूजा अर्चना प्रत्येक वर्ष तथा हिमालयी महाकुम्भ नन्दा राजजात प्रत्येक वर्ष नंदा जात के रूप में आज भी विशाल पैदल मार्ग से होते हुए पूजा अर्चना होती है के जो इस क्षेत्र के सरंक्षण व पवित्रता और संस्कृति को बचाये हुए हैं।

शब्द कुंजी– बागेश्वर, प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक धरोहर, ग्लेशियर, कुण्ड, बुग्याल, ।

परिचय

उत्तराखण्ड के सीमांत हिमालय में स्थित बागेश्वर जनपद प्राकृतिक रूप से धन धान्य युक्त भू–भाग है यह उत्तर की ओर विशाल हिमालय की गोद में वसा यह भाग प्राकृतिक सुन्दरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है यहा के प्राकृतिक सौन्दर्य सुंदर सुंदर ग्लेशियरों जहाँ प्राकृतिक सुन्दरता तो है ही साथ ही दिव्य युक्त पादप इन पादपों की समरता व सुगंधता इस क्षेत्र की औलोकिकता यहाँ आकर ही महसूस किया जा सकता है।

हिमालय के उच्च चोटियों के मध्य बड़े घास के मैदानों के बीच सुन्दर तालें, कुण्ड है जिसकी पूजा अर्चना यहाँ के ग्वाल, अनियाल करते हैं यहां पर इन कुण्डों से अनियाल और पशु पानी पीते है और जीवन के लिए यह दिव्य जड़ी बूटी युक्त ताल, कुण्ड दानपुर में पवित्रता के प्रतिक के रूप में पूजे जाते हैं और यहाँ इस क्षेत्र के लोकजागरों में जनश्रुति है कि है की "प्राचीन काल में ये कुण्ड देवी माँ नंदा भगवती के दर्पण के रूप में कार्य करते थे। रूप कुण्ड इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी है"[1] इन कुण्डों की पवित्रता आज भी वर्तमान समय में बनी हुई है। यहाँ के स्थानीय लोग आज भी इन कुण्डों की पूजा अर्चना प्रत्येक वर्ष तथा हिमालयी महाकुम्भ नन्दा राजजात प्रत्येक वर्ष नंदा जात के रूप में आज भी विशाल पैदल मार्ग से होते हुए पूजा अर्चना होती है के जो इस क्षेत्र में पर्यटन के साथ–साथ ऐतिहासिक धरोहर का सरंक्षण कर इसकी पवित्रता और संस्कृति को बचाये हुए हैं।

उद्देश्य

1. बागेश्वर जनपद में स्थित प्राकृतिक सैंदर्य व पर्यटन, तथा ग्लेशियरों, बुग्यालों, कुन्डों का ऐतिहासिक महत्व एवं इस धरोहर के महत्व का अवलोकन करना।
2. इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को पर्यटकों तक पहुचाना एवं इस क्षेत्र को रोजगार से जोड़ना तथा पलायन को रोकने का प्रयास करना।
3. बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक धरोहरों की उपयोगिता का अध्ययन करना एवं वर्तमान में पर्यावरणीय नुकसान जलवायु परिवर्तन पर गहन अध्ययन करना ।
4. इस क्षेत्र के ग्लेशियरों को हो रहे नुकसान एवं कुण्ड–तालों के सिकुडन का पता लगाना तथा इनके संरक्षण हेतु योजना बनाना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक विधि एवं ऐतिहासिक तथ्यों व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन **"बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक सौन्दर्य एक एतिहासिक धरोहर"** में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक ऑकड़ो का प्रयोग साक्षात्कार एवं प्राचीन प्रस्तर लेखों, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व सहकारी एवं गैर सहकारी संस्थानों द्वारा जारी की गई रिर्पोटों तथा शासनादेशों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही द्वितीयक ऑकडों में बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक सौन्दर्य से संबंधित पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें, समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र को चित्र, आकृति फोटोग्राफ के माध्ययम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक सौन्दर्य के रूप में ग्लेशियर (गल, दर्रे, पास)

उत्तराखंड के इस विशिष्ट भू–भाग में हिम देवी देवताओं का वास है यहां प्राकृतिक संपदाओं एवं प्राकृतिक आकर्षण, प्राकृतिक सौन्दर्यता इस क्षेत्र की पहचान है यहां के लोक जागरों में कहा गया है कि जो व्यक्ति सच्ची श्रद्धा से इस क्षेत्र में आता है उसकी मनोकामना अवश्य ही पूरी होती है। और वह इस क्षेत्र से जाने के बाद भी यहां पुनः इन वादियों में जरूर वापस आता है इसका प्रमुख कारण यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य ही हैं। ये सौन्दर्य इस प्रकार हैं–

1. **पिण्डारी ग्लेशियर (3820) मीटर –**

उत्तराखण्ड के सीमांत हिमालय में स्थित दानपुर क्षेत्र के अंतर्गत पिण्डारी गल जनपद मुख्यालय बागेश्वर से 81 किमी दूर स्थित है। "बागेश्वर से सौंग 36 किमी दूर है यह क्षेत्र मोटर मार्ग से 45 किमी की दूरी पैदल यात्रा तय की जाती है। पहला पड़ाव लोहारखेत (1760 मी०), दूसरा पड़ाव 11 किमी दूर धाकुड़ी (2680 मी०), तीसरा पड़ाव खाती (2210 मी०), चौथा पड़ाव द्वाली (2575 मी०), पांचवा पड़ाव फुरकिया (3250 मी०), फुरकिया से 5 किमी आगे पिण्डारी ग्लेशियर है जिसमे जीरो पॉइंट (3660 मी०) तक सभी पर्यटक पँहुचते है। इस समस्त पड़ावों से मैकतोली, नन्दकोट, पवलीद्वार आदि बर्फ से ढकी हिम चोटियों के दर्शन युक्त पादपों से परिपूर्ण बुग्याल पर्यटकों को मंत्र मुग्ध कर देती है"[2]।

वर्तमान समय में बागेश्वर से कपकोट भराड़ी, गाँसू, कर्मी, कर्मी विनायक, धूर, खर्किया तक कच्ची मोटर मार्ग का निर्माण हो गया है इससे पर्यटक अधिक सरल व कम पड़ावों का हो गया है खर्किया से खाती मात्र सात किमी है और अन्य पड़ाव द्वाली, फुरकिया ही मात्र पड़ाव से जाना पड़ता है जिससे इस क्षेत्र के पर्यटकों में वृद्धि भी हुई है। किन्तु इस हिम ग्लेशियर को वर्तमान में तेजी से पिघलने की पुष्टि की गयी है "यह ग्लेशियर वर्तमान में लगभग 15 किमी पीछे चला गया है"[3] पर्यावरण इसका प्रमुख कारण है इस क्षेत्र में आग लगने की तथा इस क्षेत्र के अंतिम छोर तक सड़कों का निर्माण होना तथा इन निर्माणाधीन सड़कों के कटान से काफी पेड़ पौधों को नुकसान पहुचाया जाना इसका प्रमुख कारण है साथ ही इस क्षेत्र के सुनियोजित विकास की नीति के अभाव के कारण ग्लेशियरों को काफी नुकसान हो रहा है। इस ग्लेशियर से ही मलक सिंह बूढ़ा ने ट्रेल को पास कराया था वर्तमान में यहा। पर ट्रेलपास नामक स्थान है और यहां पर लोहे की जंजीर लगी हुई है जो वर्तमान में जीर्ण अवस्था में है ट्रेलपास के पास से ही प्राचीन काल में इस क्षेत्र में व्यापार होता था यह गल लोकप्रिय गल है।

2. **सुन्दरढुंगा ग्लेशियर (3206 मी०) –**

दानपुर क्षेत्र के ग्लेशियरों में सुन्दरढुंगा का प्रमुख स्थान है पिण्डारी ग्लेशियर मार्ग पर ही खाती गाँव से एक दूसरा मार्ग सुन्दरढुंगा गल को जाता है खाती से 7 किमी जतोली गाँव (2440 मी०) है जतोली से द्दियाढांग (2740 मी०) है इससे आगे सुन्दरढुंगा (3206 मी०) ग्लेशियर पहुचते हैं खाती के स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों को यात्रा व पोर्टर के इंतजाम में मददगार रहते हैं। "सुन्दरढुंगा ग्लेशियर में ही नन्दाकुंड है"[4] यह दानपुर वासियों का पवित्र कुण्ड है यहाँ प्रत्येक वर्ष स्थानीय लोग पूजा अर्चना हेतु नंदा भगवती जात यात्रा इसी क्षेत्र से होते हुए जाते हैं और मॉ नंदा भगवती के दर्शन करते हैं।

3. **मैकतोली ग्लेशियर –**

"सुन्दरदुंगा गल से मैकतोली ग्लेशियर (4320 मी०) पर स्थित है सुन्दरढुंगा गाड़ (मैकतोली नदी) यही से ही निकलती है जो आगे चलकर पिण्डर नदी में मिल जाती है"[5]। मैकतोली ग्लेशियर सुंरदढुंगा के पास ही स्थित है वर्तमान में इस ग्लेशियर पर "सर्वाधिक पर्यावरण प्रदूषण"[6] का प्रभाव यहां देखने को मिलता है यथा समय रहते इस ग्लेशियर का संरक्षण ना होने पर इस ग्लेशियर का अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा।

4. **कफनी, कुफनी ग्लेशियर –**

उत्तराखण्ड के सीमांत हिमालय में स्थित सरयू के उद्गम स्थल सरमूल के समीप स्थित है यहाँ पिंडारी ग्लेशियर मार्ग से द्वाली पड़ाव से मार्ग जाता है द्वाली से 11 किमी दूर कफनी ग्लेशियर स्थित है कफनी मार्ग पर में ही द्वाली से 5 किमी बाद खटिया नामक खुबसूरत स्थान है जहाँ रात्रि विश्राम हेतु जिला पंचायत का एक निरीक्षण भवन है खटिया से कफनी ग्लेशियर 6 किमी दूर स्थित है यहाँ गुफाएँ भी है कहा जाता है कि "इन गुफाओं में ऋषि मुनियों द्वारा प्राचीन काल में तपस्या की"[7]।

आज भी साहसी पर्यटक यहाँ स्थित गुफाओं में भी रात बिताते हैं। अधिकतर पर्यटक द्वाली से कफनी ग्लेशियर की यात्रा एक ही दिन में तय कर लेते है इन गुफाओं में ब्याली गुफा प्रमुख गुफा है जहाँ पर्यटक रात्रि में विश्राम करते हैं। यह गुफा कटोरे के आकार का है यहां के स्थानीय लोग बताते हैं कि "प्राचीनकाल में इस गुफा में ऋषि मुनियों ने तप किया और मोक्ष प्राप्त"[8] किया।

5. **हीरामणि ग्लेशियर –**

दानपुर क्षेत्र के विचला दानपुर के अंतिम गाँव जनपद बागेश्वर के सीमांत गाँव कीमू से उपर हीरामणि ग्लेशियर है इसकी खुबसूरती गोगिना गाँव से देखी जा सकती है। "बडकटिया हिमालय के बांयी ओर यह स्थित"[9] है पूर्वी रामगंगा हिमनद इसका भी हिस्सा है यहाँ ग्लेशियर में जाना अधिक कठिन है क्योंकि इसका मार्ग सिर्फ "अनियालों द्वारा ही खोजा"[10] गया है इसकी पहचान अभी वर्तमान तक ही हो पायी यह एक आकर्षक गल है यहां आवाजाही कम होने से अपने पूर्व अवस्था में है इस ग्लेशियर में कम पयर्टक जाते हैं क्योंकि यहां सुदृढ़ ट्रैकिंक रास्ते का अभाव है इसे वर्तमान समय तक विशेष पहचान नहीं मिल पायी है।

वर्तमान समय में बागेवर जनपद द्वारा हीरामणि ग्लेशियर को एक विश्व धरातल पर पहचान दिलाने के लिए पर्यटन ग्लेशियर के रूप में पहचान दिलाने की पौरवी की जा रही है किन्तु कठिन मार्ग एवं नई शोध के अभाव के कारण इसमें पर्याप्त सफलता नहीं मिल पा रही है। हीरामणि ग्लेशियर मुनस्यारी जाने के लिए इस क्षेत्र के पशुचारक यहीं से होकर जाते हैं इस ग्लेशियर को विश्वव्यापी पहचान दिलाने के लिए "वर्ष 2018–19 में इस ग्लेशियर को पर्यटन क्षेत्र घोषित"[11] किया गया है तथा दानपुर के ग्वाल, ग्लेशियर यही से होकर यहाँ के बड़े बड़े घास के मैदान में होते हुए हीरामणि ग्लेशियर के दर्शन करते है।

बागेश्वर जनपद के प्राकृतिक सौन्दर्य के रूप में ताल व कुण्ड :–

उत्तराखण्ड के सीमांत हिमालय की गोद में बसा क्षेत्र जहाँ ऊँचे–ऊँचे पर्वतों के बीच बड़े–बड़े घास के मैदान जिन्हें बुग्याल कहा जाता है इनके मध्य दिव्य जड़ी बूंटी युक्त जल संग्रह कुण्ड के रूप में जाना जाता है ये कुण्ड ताल के आकर से छोटे होते हैं। "इन कुण्डों को इस क्षेत्र में पवित्र रूप से पूजा जाता हैं"[12]। और नन्दा जात एवं नन्दा राजजात में इन कुण्डों की पवित्रता और पूजनीय स्थल के रूप में धार्मिक यात्राओं के लिए भी जाते हैं। इस क्षेत्र के प्रमुख कुण्ड इस प्रकार हैं।

1. **नन्दा कुण्ड –**

बागेश्वर में नन्दा कुण्ड एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है जहाँ देवी माँ नन्दा भगवती की पूजा अर्चना होती है इस क्षेत्र में प्रतिवर्ष नन्दा कुण्ड पूजा हेतु जात यात्राएं होती है यह यात्रा देवी नन्दकुण्ड की लगभग 70 किमी की अत्यंत दुर्गम मार्ग से यात्रा होती है। बागेश्वर के सीमान्त क्षेत्र के लोग इस महापर्व को रूप नन्दा कुण्ड में पूजा अर्चना हेतु जाते है उच्च हिमालयी क्षेत्र में स्थित यह कुण्ड अत्यंत रमणीक है इसके नीचे कौतेला बुग्याल जहा पशु व चारकों का रमणीक स्थल है कौतेला से एक ओर माँ सरयू का उद्गम स्थल तथा दूसरी और पिण्डारी और कफनी ग्लेशियर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

नन्दा कुण्ड के चारों ओर ब्रह्मकमल खिले रहते हैं। इस क्षेत्र के लोकजागरों में जनश्रुति है कि "इस कुण्ड में एक पत्ता तक नहीं गिरता है जो भी गिरता है उसे चिड़ियाँ उठाकर दूर करती है"[13]। यह कुण्ड में माँ नन्दा ने अपने रूप को देखने अर्थात यह "कुण्ड माँ नन्दा के दर्पण के रूप में मानी जाती है"[14]। यहाँ के लोगों का मानना है की नन्दा कुण्ड को गये सभी श्रद्धालु नन्दा कुण्ड तक नहीं जाते है यहाँ माँ नन्दा भगवती के प्रमुख पुजारी ही इस कुण्ड तक जाते हैं और वह भी अवतरित डंगरिया ही इस कुण्ड की पूजा अर्चना एवं स्नान करके वापस आते हैं। और अन्य साथी बालछन कुण्ड तक

ही जाते हैं और वहां स्नान करते हैं। और वह ब्रह्मकमल लेकर स्थानीय मंदिर को आते हैं भव्य रूप के पूजा अर्चना होती है। और माँ नन्दा भगवती के डंगरिये अवतरित होकर शुभ आशीष देते हैं। इस भक्तिमई माहौल से कोई भी श्रद्धालु माँ नन्दा भगवती से शुभ आशीष लेना नहीं भूलता है।

यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि नन्दा कुण्ड से जो भी धामी आते हैं उनके दर्शन एवं ब्रह्मकमल के दर्शन से घर में सुख शान्ति मिलती है यह धार्मिक विश्वास दानपुर में आज भी प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। कहा जाता है यह कुण्ड हमेशा ही भरा रहता है और माँ नन्दा के मुख्य धामी का मानना है कि अब कुण्ड में पवित्र जल धीरे–धीरे कम हो रहा है प्रदूषण इसका प्रमुख कारण है। नन्दा कुण्ड राली तथा नन्दा कुण्ड रजला कौतला ये दोनों कुण्ड भी दानपुर के प्रतिष्ठित कुण्ड हैं लीती से नन्दा कुण्ड को जाते समय भी ये कुण्ड धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। इसके समीप ही बालछन कुण्ड बाजोमाना के पास स्थित है यह भी धार्मिक रूप से बड़ा महत्वपूर्ण है नन्दा कुण्ड जाते समय यहाँ पर भी बड़ी धूमधाम से पूजा होती है और डंगरिये भी नाचते हैं।

2. **"सुकुण्डा, शुद्ध कुण्ड"**[15] –

बागेश्वर के ग्राम पोथिंग की चोटी में फैला रमणीक स्थल है यहाँ से सूर्यास्त एवं सूर्योदय के मोहक नज़ारे यहाँ से दिखते हैं यहाँ उत्तर में फैला हिमालय दिखता है यहाँ सदा विचरण करते रहने वाले पक्षियों का विचरण पथ का पड़ाव भी है पर्यटकों को सुकुण्डा तक जाने में बड़ा कठिन मार्ग से जाना पड़ता है।

सुकुण्ड पोथिंग गाँव से 10 किमी ऊचाई पर स्थित है यहाँ के स्थानीय लोग इस कुण्ड की पवित्र रूप से पूजा अर्चना की जाती है। पर्यटन की दृष्टिकोण से यह कुण्ड अत्यधिक आकर्षक है जो भी पर्यटक माँ भगवती के मंदिर पोथिंग आता है तो वह सुकुण्डा जाना नही भूलता है। यह पर्यटन हेतु आकर्षक भू क्षेत्र है। लोक कथानुसार इस तालाब का निर्माण महाभारत में अज्ञातवास के दौरान भीम द्वारा किया इस कुण्ड के पूर्व में पोथिंग, उत्तर में तोली, पश्चिम में जगथाना, दक्षिण में पुडुकुनी गॉव है पांडुथल ठीक इसके सामने है कहा जाता है कि प्राचीन काल में यह बहुत बड़ा कुण्ड था और बड़ा होने के कारण अर्जुन ने इसे तीर मारकर पानी कम किया यहा कितना सत्य है इसके कोई एतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते किन्तु यह सत्य है कि यह कुण्ड छोटा एवं उसका आकार तीरनुमा गहरे घाव आज भी देखे जा सकते है।

परिणाम

1. बागेश्वर के प्राकृतिक सौन्दर्य को वर्तमान में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विश्व धरातल पर पर्यटन बढ़ने हेतु वर्ष 2021–2022 को विश्व पर्यटन दिवस के सुअवसर पर पिंडारी क्षेत्र को पर्यटन क्षेत्र घोषित किया।
2. इस क्षेत्र की प्राकृतिक सौंदर्यता एवं पर्यावरण संरक्षण को देखते हुए भारत सरकार द्वारा रिजर्व क्षेत्र घोषित किया गया है।
3. भारत सरकार प्रत्येक वर्ष जलवायु परिवर्तन को देखते हुए मौसम एवं भू वैज्ञानिकों द्वारा नये नये सर्वेक्षण कर क्षेत्र को संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।
4. समस्त संरक्षण के बाद भी इस क्षेत्र में आग लगना, एवं सीमान्त गॉवों तक यातायात हेतु मोटर मार्ग के निर्माण से पेड–पौधों को खूब काटा जा रहा है और अत्यन्त भारी मशीनों से पहाड़ो को काटा जा रहा है। साथ ही मोटर मार्ग के कटिंग के दौरान आया मलुआ, पत्थर, आदि डंपिग जॉन में न डालकर सीधे पहाड़ी से नीचे डाल जाता है जिससे प्राकृतिक सौन्दर्य को काफी नुकसान पहुच रहा है।

निष्कर्ष

बागेश्वर जनपद के सीमांत क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण मनमोहक है। और जो भी पर्यटक इस क्षेत्र में भ्रमण के लिए आता है इसके तारीफों के पुल बांधकर ही जाता है। इस हिमालयी क्षेत्र के ग्लेशियर पिण्डारी, सुन्दरढुंगा,

मैकतोली, कुफनी, हीरमणि विश्वप्रसिद्ध हैं। इसके साथ ही इस क्षेत्र के ऊँचे–ऊँचे पर्वतों के ऊपर बड़े–बड़े घास के मैदान जिन्हें बुग्याल कहा जाता है। इसमे ऊगे द्रव्ययुक्त पादप से पालतू पशु हस्टपुष्ट होते हैं और यहॉ पर वर्तमान में पर्यटक जाते हैं और रात्री विश्राम करते हैं। इन बुग्यालों में शम्भू, सुंन्दरवन, धाकुड़ी, चफुवा, रनथन रहाली, बिनायक, हितागैर आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में उंचे–उंचे पर्वतों के बीच बड़े–बड़े गुफा एवं उडियार हैं इन्हें इस क्षेत्र में बड़ी श्रद्धा के साथ ऋषि मुनियों की तपोभूमि, तपोस्थली के रूप में देखा जाता है। इस पर और गहन शोध की आवश्यकता है और इस क्षेत्र में यह एक सीमित प्रयास है। यहाँ के गौरी उडियार और काऊ उडियार व भद्रतुंगा उडियार महत्वपूर्ण है। इन स्थानों को जाने के लिए जर्जर मार्ग बने हैं यहाँ जाने के लिए सुदृढ़ मार्ग बनाये जाने की आवश्कता है। इस क्षेत्र में ऊँचे–ऊँचे पर्वतों के मध्य कुण्ड बने हुए हैं जो नंदा कुण्ड, बालछनदेव कुण्ड, गौरी कुण्ड, सुकुण्ड प्रमुख हैं इस क्षेत्र में इन कुण्डों में स्नान व पूजा अर्चना होती है। इस क्षेत्र में मान्यता है कि मां नन्दा भगवती इन कुण्डों में अपना रूप देखती थी यह कुण्ड दर्पण का कार्य करते थे यह सत्यता भी प्रतीत होती हैं। ये कुण्ड स्वच्छ और साफ भी हैं। किन्तु इस क्षेत्र में सुनियोजित विकास के अभाव तथा जंगलों में आग लगने से इन प्राकृतिक सौन्दर्यो को काफी नुकसान हो रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की जल संरक्षण अध्ययन परियोजना के अंतर्गत वैज्ञानिकों द्वारा किय गये अध्ययन में इस हिमालयी क्षेत्र दानपुर की नदियां सरयू, पिंडर, कैल, शंभू जैसी पवित्र नदियों के स्रोत, हिम ग्लेशियर प्रतिवर्ष 12 से 14 मीटर की दर से सिकुड़ रहे हैं। इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्यों का यदि समय रहते संरक्षण, संरक्षित नहीं किया गया तो इस क्षेत्र में महाविनाश हो जाएगा। और भावी जीवन समाप्त हो जाऐगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एटकिंसन ई,टी, हिमालयन गजेटियर, ग्रन्थ 1, भाग– 2, पृष्ठ–12
2. उत्तरामैती, कल्याण सिंह रावतः उत्तराखण्ड एटलस, उत्तराखण्ड दृश्य मानचित्रावली, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, 2011
3. रतन सिंह दानू पिंडारी पर्यटक गाईड, 40,साक्षात्कार, ग्राम–बाछम, पोस्ट खाती, बागेश्वर, दि0– 15/07/2020 समय 8 पी.एम
4. उपरोक्त साक्षात्कार, रतन सिंह दानू
5. बिष्ट,डॉ. शेरसिंहः मध्य हिमालय समाज संस्कृति एवं पर्यावरणः, इण्डियन पब्लिशर्स, दिल्लीः 2003।
6. अमर उजाला– शनिवार पृष्ठ 4, दिनांक 23 अप्रैल– 2008
7. दयाल सिंह कुमाल्टा,–46 वर्ष साक्षात्कारः भराड़ी कपकोट, बागेश्वर दि0 20/05/2019 समय 2 पी.एम.
8. उपरोक्त साक्षात्कार, दयाल सिंह कुमाल्टा,
9. उनियाल हेमाः मानसखण्डः उत्तरा बुक्स, केशवपुरम दिल्लीः 2014।
10. सोबन सिंह दानू, 72 वर्ष,:साक्षात्कार–ग्राम झूनी, बागेश्वर, दिनांक 07/07/2015 समय 07 पी.एम.
11. अमर उजाला – शनिवार पृष्ठ 3, दिनांक 07 अप्रैल– 2018
12. उपरोक्त साक्षात्कार, सोबन सिंह दानू,
13. स्कन्द पुराण मानसखण्ड व्याथाकार, पाण्डेय, गोपाल दत्त, गीता प्रेस गोरखपुर, 1989
14. उपरोक्त, स्कन्द पुराण मानसखण्ड व्याथाकार,
15. भगवत सिंह गड़िया, 56 वर्षः, साक्षात्कार ग्राम पोथिंग, बागेश्वर, दिनांक 08/09/2020 समय–8 पी.एम.